ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 116-118**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

मनुस्मृति के अनुसार संस्कारों का अध्ययन

1. डॉ0 राकेश प्रताप शाही
2. अपराजिता सिंह

1. आचार्य, 2. शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र विभाग, श्रीभगवान महावीर पी0जी0 कालेज, फाजिलनगर, कुशीनगर, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-01.05.2024, Revised-06.05.2024, Accepted-10.05.2024 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांश: *भारत वर्ष एक महान देश है और इसकी प्राचीनतम पूरी दुनिया में विख्यात है। इस देश के साहित्य, वेद, दर्शन उपनिषद, ब्रह्मणग्रंथ एक मनुस्मृति आदि नानाविद् साहित्य सम्पूर्ण जगत् के कल्याण के लिए आज भी प्रासंगिक है। एक ओर जहाँ वेदों ज्ञान, कर्म उपासना तथा विज्ञान की बातें कही है, वहीं दूसरी ओर उपनिषद आदि ग्रंथ मानव समाज को मोक्ष दिलाने का मार्गदर्शन करता है। मनुस्मृति जैसा पावन धर्मशास्त्र मानव जीवन को उन्नत प्रगतिशील और संस्कारों में मानव धर्म के मानदण्डों के द्वारा राष्ट्र को सुव्यवस्थित बनाने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया है। महर्षि मनु अपने ग्रंथ में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त संस्कारों का वर्णन बड़े ही चारित्रिक और राष्ट्र निर्माण का मूल मंत्र पिरोया।*

कुंजीभूत शब्द– वेद, दर्शन, मनुस्मृति, उपनिषद, साहित्य, वेद, दर्शन उपनिषद, ब्रह्मणग्रंथ, प्रासंगिक, कर्म उपासना, उपनिषद।

भारतीय धर्मशास्त्र साहित्य में कल्पसूत्रों की चार विधाओं– 1. श्रौतसूत, 2. गृहसूत्र, 3. धर्मसूत्र, 4. शुल्वसूत्र इत्यादि के अनन्तर स्मृति साहित्य का स्थान आता है।

महर्षि मनु ने संस्कार में सभी के हितों का ध्यान रखा है वह मनुष्य किसी भी वर्ण का क्यों ना हो। अपने विभिन्न आयामों के द्वारा संस्कार विधायक सूत्रों का प्रणयन महर्षि मनु ने आदिकाल से मानव जाति का विकास करने के लिए सर्व युगीन चित्र अंकित किया है। इस ग्रन्थ में अनेक विषयों का समन्वय है। राष्ट्र के निर्माण हेतु संस्कार सर्वोकृष्ट है। संस्कारों के विविध विषयों को विभाजित कर उसके विषय में वर्णन करेंगे।

1. संस्कार, 2. संस्कारों का महत्व, 3. संस्कारों का उद्देश्य, 4. संस्करों की व्यवस्था, 5. हिन्दू धर्म में संस्कारों का स्थान, 6. संस्कारों की उपयोगिता, 7. मानव की शोभा संस्कारों से, 8. संस्कार कहाँ कब और कैसे मिले, 9. संस्करों में शिक्षक का योगदान, 10. संस्कार का अर्थ एवं परिभाषा।

1. संस्कार – संस्कार शब्द का अर्थ है 'शुद्धिकरण'। जीवात्मा जब एक शरीर को त्याग कर दूसरे में जन्म लेना है, तो उसके पूर्व जन्म के प्रभाव उसके साथ जाते है। इन प्रभावों का वाहक सूक्ष्म शरीर होता है, जो जीवात्मा के साथ एक स्थूल शरीर से दूसरे स्थूल शरीर में जाता है। इन प्रभावों में कुछ बुरे होते हैं और कुछ भले। बच्चा भले और बुरे प्रभावों को लेकर नए जीवन में प्रवेश करता है संस्कार का उद्देश्य है कि पूर्व जन्म के बुरे प्रभावों का धीरे–धीरे अन्त हो जाए और अच्छे प्रभावों की उन्नति हो।

संस्कारों हि नाम संस्कार्यव्य गुणाधानेन वा।।
स्याद्योषाय नयनेन वा।।1।।

अर्थात् – व्यक्ति में गुणों का आरोपण करने के लिए जो कर्म किया जाता है, उसे संस्कार कहते हैं।

ऋग्वेद में संस्कारों का उल्लेख नहीं है, किन्तु इसके कुछ सूक्तों में विवाह, गर्भाधान और अत्येष्टि से सम्बन्धित कुछ धार्मिक कृत्यों का वर्णन मिलता है।

2. संस्कारों का महत्व – मानव जीवन में संस्कारों का अत्यधिक महत्व है। संस्कारों का सर्वाधिक महत्व चित्त की शुद्धि के लिए है। संस्कारों के द्वारा ही मनुष्य का चरित्र निर्माण होता है और विचारों के अनुरूपय क्योंकि चरित्र ही वह धुरी है, जिस पर मनुष्य का जीवन सुख, शान्ति और मान–सम्मान को प्राप्त करता है। संस्कार के द्वारा मानव चरित्र में सद्गुणों का संचार होता है, दोष, दुर्गुण दूर होते हैं। मानव जीवन को जन्म देकर मृत्यु तक सार्थक बनाने तथा सत्य–शोधन की अभिनव व्यवस्था का नाम साकार है। संस्कारों का मूल प्रयोजन आध्यात्मिक भी है तथा नैतिक विकास का भी है, क्योंकि मानव जीवन को पवित्र एवं उत्कृष्ट बनाने वाले आध्यात्मिक उपचार का नाम संस्कार है।

मनु और याज्ञवल्य, ने कुल 13 संस्कारों की चर्चा की है, लेकिन बाद में कुछ 16 संस्कार बताए गए। इसमें तीन जन्म के पहले, आठ जन्म के बाद विवाह तक विवाह और उपसंवेशन (वर–वधू मिलन) और अत्येष्टि (श्राद्ध) होते है। इस तरह भी कुल 13 ही संस्कार हुए। वे संस्कार पूर्वजन्म के दोषों को दूर करने और नये गुणों का समावेश करने के लिए किए जाते है।

दशमासाच्छश्यानः कुमारो अधि मातरि।
निरैतु जीवो अक्षतों जीवनत्या अधि।।2।।

अर्थात – हे परमात्मा, दस माह तक माता के गर्भ में रहने वाला सुकुमार जीव प्राण धारण करता हुआ अपनी प्राण शक्ति सम्पन्न माता के शरीर से सुखपूर्वक बाहर निकले।

स्मृतियों में संस्कारों की संख्या में मतैक्य नहीं है तथा परवर्ती काल में संस्कारों की संख्या का निर्धारण कर दिया गया। इन संस्कारों में जन्मपूर्व से लेकर बाल्यकाल के 10 संस्कारों और शेष 6 शैक्षणिक तथा अन्तेष्टि पर्यन्त से संस्कार परिगणित है।

1. गर्भाधान, 2. पुंसवन, 3. सीमन्तोन्नयन, 4. जातकर्म, 5. नामकरण, 6. निष्क्रमण, 7. अन्नप्राशन, 8. चूड़ाकरण, 9. कर्णवेध, 10. विद्यारम्भ, 11. उपनयन, 12. वेदारंभ, 13. केशान्त, 14. समावर्तन, 15. विवाह, 16. अन्तेष्टि।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

3. संस्कारों का उद्देश्य – संस्कारों के मुख्यतः दो उद्देश्य थे, पहला प्रकृति में विरोधी शक्तियों के प्रभाव को दूर करना और हितकारी शक्तियों को अपनी ओर आकर्षित करना था, क्योंकि प्राचीन हिन्दुओं का भी अन्य प्राचीन जातियों की भांति यह विश्वास था कि मनुष्य कुछ अधिमानव प्रभावों से घिरा हुआ है। इस प्रकार वह बुरे प्रभाव को दूर करके और अच्छे प्रभाव को आकर्षित करके देवताओं और इन अधिमानव शक्तियों की सहायता से समृद्ध और सुखी रहेगा। संस्कारों के द्वारा वे पशु, संतान, दीर्घायु, सम्पत्ति और समृद्धि की आशा करते थे।

दूसरा मुख्य उद्देश्य सांस्कृतिक था मनु के अनुसार मनुष्य संस्कारों के द्वारा इस संसार के और परलोक के जीवन को पवित्र करता है।

आपोऽशाद ब्राह्मणस्यानवीतः कालो भवति।।3।।
आद्धाविशाद राजन्यस्य।।4।।
आचतुविशाद वैश्यस्य।।5।।

अर्थात् – तीव्र बुद्धि पाने की इच्छा से ब्राह्मण का पाँच बलवान क्षत्रीय का छः और कृषि आदि करने की इच्छा वाले वैश्य का आठ वर्ष की अवस्था में यह संस्कार करने का विधान है।

संस्कारों के द्वारा व्यक्ति पहले से अधिक संगठित और अनुशासित होकर एक चरण से दूसरे चरण में प्रवेश करता था। इस प्रकार प्रशिक्षण देकर व्यक्ति को समाज के लिए पूर्णतया उपयोगी बनाया जाता था। योग्य संतान उत्पन्न करके पति–पत्नी समाज के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करते थे, किन्तु साथ ही वे अपनी निजी उन्नती भी करते थे। गृहस्थाश्रम भी वानप्रस्थ की ओर इसी प्रकार वामप्रस्थ सन्यास की पृष्ठभूमि हैं। सभी आश्रम व्यक्ति को उसके लक्ष्य की ओर ले जाते है।

4. संस्कारों की व्यवस्था – संस्कार शब्द सम् पूर्वक कृ–धातु से धञ प्रत्यय करके निष्पन्न होता है संस्कार शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। संस्कृत वाङ्मय में इसका प्रयोग शिक्षा, संस्कृति, प्रशिक्षण, सौजन्यपूर्ण, व्याकरण सम्बन्धी शुद्धि, संस्करण, परिष्करण, शोभा, धार्मिक विधि विद्या, अभिषेक, विचार, भावना धारणा, कार्य का परिणाम क्रिया की विशेषता आदि व्यापक अर्थों में किया जाता है।

हिन्दू संस्करों में अनेक वैचारिक और धार्मिक विधियों को समाविष्ट कर दी गयी है। जिससे वाह्य परिसकार के साथ ही व्यक्ति के सदाचार की पूर्णता का भी विकास हो सकें। सविधि संस्करों के अनुष्ठानों से संस्कृत व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रभाव हो ही जायेगा।

आत्मशरीरान्तरनिष्ठो विहितं।।6।।
क्रियाजन्योअतिशिय विशेषः संस्कार।।
कार्य शरीरसंस्कारः पावनः प्रेत्य चेहच।।7।।

संस्कारों की संख्या संस्कारों के शास्त्रीय प्रयोग के सम्बन्ध में गृह्यसूत्रों को ही प्रमाण माना गया है।

5. हिन्दू धर्म में संस्कारों का स्थान– संस्कारों का हिन्दू धर्म में महत्वपूर्ण स्थान था। प्राचीन समय में जीवन विभिन्न खण्डों में विभाजन नहीं, बल्कि सरल था। सामाजिक विश्वास कला विज्ञान आपस में सम्बन्धित थे। गृह्यसूत्रों से पूर्व हमें संस्कारों के पूरे नियम नहीं मिलते। ऐसा प्रतीत होता है कि गृह्यसूत्रों से पूर्व पारंपरिक प्रथाओं के आधार पर ही संस्कार होते थे। सबसे पहले गृह्यसूत्रों में ही संस्कारों के वर्णन में सबसे पहले विवाह संस्कार का उल्लेख है, इसके बाद गर्भाधान, पुसंवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, उपनयन और समावर्तन संस्कारों का वर्णन किया गया है। अधिकतर गृह्यसूत्रों में अंत्येष्टि संस्कार का वर्णन नहीं मिलता, क्योंकि ऐसा करना अशुभ समझा जाता था।

पौराणिक हिन्दू धर्म के साथ वैदिक धर्म का ह्रास हुआ। इसके परिणामस्वरूप जो संस्कार घर पर होते थे, वे अब मन्दिरों और तीर्थस्थानों पर किये जाने लगे। यद्यपि दीर्घ तथा विस्तृत यज्ञ प्रचलित नहीं रहे, किन्तु संस्कार जैसे यज्ञोपवीत तथा चूड़ाकरण, कुछ परिवर्तन के साथ वर्तमान समय में भी जारी है।

6. संस्कारों की उपयोगिता – प्राचीन समय में संस्कार बड़े उपयोगी सिद्ध हुए। उनसे व्यक्तित्व के विकास में बड़ी सहायता मिली। मानव जीवन को संस्कारों में परिष्कृत और शुद्ध किया तथा उसकी भौतिक तथा आध्यात्मिक आकांक्षाओं को पूर्ण किया। अनेक प्रकार के सामाजिक समस्याओं का निराकरण भी संस्कारों द्वारा हुए। संस्कारों के समय जो धार्मिक क्रियाएँ व्यक्ति को इस बात की अनुभूति करती थी कि अब उसके ऊपर कुछ नई जिम्मेदारियाँ आ रही है, जिन्हें पूरा करके ही वह समाज की और अपनी दोनों की उन्नति कर सकता है।

इस प्रकार संस्कार पूर्वजन्म के दोषों को दूर करके और गुणों का विकास करने में सहायक होकर व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करके व्यक्ति और समाज दोनों की उन्नति में सहायक होते थे।

7. मानव की शोभा संस्कारों से – जिस व्यक्ति में संस्कारों का समावेश होता है, वही सम्मानित होता है। भारतीय संस्कृति की सभ्यता और पवित्रता मनुष्य के माध्यम से ही प्रसारित है। मानव का सोच और उसकी जीवन शैली पर सभ्यता और पवित्रता की रक्षा हो सकती है। जीवन शैली में अन्तर देखने को मिलता है जीवन शैली में आधुनिकता आ गयी है और विचारों में भी आधुनिकता आ गई इसलिए संस्कृति पर बड़ी तेजी से आघात हो रहा है। शिक्षा का अपना ही महत्व है। परन्तु जीवन शैली में अगर शिक्षा आ जाता है तो व्यक्ति शान्तिपूर्ण ढंग से नहीं जी सकता है। मानव में जबतक नियम बद्धता सालिनता नहीं रहेगा, तब तक उन्नति की ओर हम

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

अग्रसर नहीं हो सकते, श्रेष्ठ संस्कारवान मानव का निर्माण ही संस्करों के द्वारा ही मनुष्य में शिष्टाचार एवं सभ्य आचरण की प्रवृत्ति का विकास होता है। सर्वसाधारण के मानसिक, चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास के लिए सर्वांग सुन्दर विधान संस्कारों का है।

8. संस्कार कहाँ–कब और कैसे मिले – कालांतर में जन साधारण संस्कारों के सामाजिक और धार्मिक महत्व को भूल गए। संस्कार परम्परा मात्र रह गये। उनमें गतिशीलता न रही। समाज की बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार उनमें परिवर्तन नहीं किये गये। उनमें मानव को सुसंस्कृत बनाने की शक्ति न रही।

वे नित्य चर्चा से सम्बन्धित धार्मिक कृत्य मात्र रह गये उनकी जीवन पर प्रभाव लेशमात्र भी न रहा। अब वैज्ञानिक प्रगति के कारण जीवन की संकल्पना ही बदल गयी है।

अब मानव उन अतिमानव शक्तियों में विश्वास नहीं करता, जिनके अशुभ प्रभाव को दूर करने और अच्छे प्रभाव को आकर्षित करने के लिए संस्कार किये जाते थे। अतः मनुष्य अब भी संस्कारों के द्वारा अपने जीवन को पवित्र करना चाहता है। मनुष्य अब भी यह भली–भांति जानता है कि जीवन एक कला है। उसको सफल बनाने के लिए जीवन का परिष्कार करने की आवश्यकता है। व्यक्ति के सुसंस्कृत होने पर ही समाज सुसंस्कृत हो सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्तमान काल में भी संस्कारों का अपना अलग महत्व है। संस्कारों का रूप बदल सकता है, किन्तु जीवन को सफल बनाने की दिशा में उनका महत्व कम नहीं हो सकता।

कदली शिप भुजंग मुख स्वाती एक गुण तीन।
जैसी संगती वैठिये, वैसा ही फल दीन।।

स्वाति नक्षत्र में आकाश से गिरने वाली एक जल की बूँद अगर केले के पत्ते पर गिरती है, तो वह बूँद कपूर हो जाती है। वही बूँद अगर शीप में जाये तो मोती बन जाती है, अगर साँप के मुख में जाये तो जहर बनती है, जैसी संगति मिलती है वैसी ही जल की बूँद बन जाती है। उसी तरह से मनुष्य जिसके साथ रहता है वैसा बन जाता है।

9. संस्कार में शिक्षक का योगदान – जीवन का प्रारम्भ संस्कार और संगति से होता है। अगर संस्कार और संगति अच्छे मिल जाये तो मानव का जीवन आदर्श हो जाता है। शिक्षक शब्द में कितने ही गुण है इसमें तीन अक्षर है – शि, क्ष, क।

'शि' का अर्थ है, शिष्टावान। 'क्ष' का अर्थ क्षमावान। 'क' का अर्थ कर्तव्यमान, अर्थात् जो शिष्टावान, क्षमावान कर्तव्यवान होता है। वही अच्छा और सच्चा शिक्षक है। शिक्षक शिष्ट है सदाचारी है तो शिक्षा अच्छी देगा और जीवन का निर्माण अच्छा करेगा। शिक्षक भी माता के तुल्य होता है। योग्य सलाह देकर उत्थान करता है। प्रारम्भ का जीवन तो कच्ची मिट्टी की तरह होता है, परन्तु कुम्हार के पास ही एक अच्छें घड़े का रूप ले लेता है। वैसे ही मनुष्य अच्छे शिक्षक के पास जाता है, तो अच्छा और आदर्श व्यक्तित्व का धनी हो जाती है।

10. संस्कार का अर्थ एवं परिभाषा – धर्मशास्त्रों में संस्कारों का अर्थ परिभाषा एवं स्वरूप का वर्णन किया गया है। प्रकृति से उत्पन्न होने वाली वस्तु प्राकृत कहलाती है।

''गुणदोषमयं सर्व स्रष्टा नजति कौतुकी।''

इसके अनुसार सर्वत्र गुण–दोषों का सम्मिश्रण देखा जाता है। व्यक्ति को परिष्कृत करने के लिए संस्कारित करने के लिए जो पद्धति अपनाई जाती है, उसे ही संक्षेप में संस्कार कहते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. धर्मशास्त्र का इतिहास, प्रथम खण्ड, पृ0 46.
2. वसिष्ठ, धर्मसूत्र (4.1) श्रुतिस्मृतिविहितो धर्मः।
3. ऋग्वेद, 8.30.3.
4. ताण्डय, 23.16.17.
5. महाशान्ति, 21, 12, 37, 45.
6. मनुस्मृति में राजतंत्र, पृ0 42.
7. ऋग्वेद, 8.30.3.
8. निरुक्त, 3.3.
9. वर्तमान काल में मनुस्मृति की प्रसाङ्गिता, पृ0 59.
10. गौतम, 8.3.
11. मनु, 2.34.

*****